MPPEB

मध्य प्रदेश शासन,
स्कूल शिक्षा विभाग द्वारा आयोजित

AGRAWAL EXAMCART
Paper Pakka Fasega!

मध्य प्रदेश प्राथमिक शिक्षक पात्रता परीक्षा (ऑनलाइन) 2022

संस्कृत भाषा

सम्पूर्ण स्टडी गाइड
(वर्ग-3)

- पाठ्यक्रमानुसार सम्पूर्ण थ्योरी
  M.P. School Edu. Board की पाठ्य-पुस्तकों पर आधारित
- 700+ महत्वपूर्ण प्रश्नों का व्याख्यात्मक हल सहित अध्यायवार समावेश
- 02 प्रैक्टिस सेट्स

VERY IMPORTANT — 30 नवंबर 2021 को M. P. Primary TET के Notification में जारी पाठ्यक्रम पर आधारित एकमात्र पुस्तक

Code	Price	Pages
CB463	₹ 149	192

MPPEB

मध्य प्रदेश शासन,
स्कूल शिक्षा विभाग द्वारा आयोजित

AGRAWAL EXAMCART
Paper Pakka Fasega!

मध्य प्रदेश प्राथमिक शिक्षक पात्रता परीक्षा (ऑनलाइन) 2022

संस्कृत भाषा

सम्पूर्ण स्टडी गाइड
(वर्ग-3)

Prepared by:

Examcart Experts

Book Name	MPTET संस्कृत भाषा स्टडी गाइड (वर्ग–3) 2022
Editor Name	Rahul Agarwal
Edition	Latest
Published by	Agrawal Group Of Publications (AGP)
ADDRESS (Head office)	28/115 Jyoti Block, Sanjay Place, Agra, U.P. 282002
CONTACT	quickreply@agpgroup.in We reply super fast
BUY BOOK	www.examcart.in Cash on delivery available
WHATSAPP (Head office)	8937099777
PRINTED BY	Schoolcart
DESKTOP PUBLISHING	Agrawal Group Of Publications (AGP)
ISBN	978-93-89608-43-4
© COPYRIGHT	Agrawal Group Of Publications (AGP)

© All Rights reserved.

Disclaimer: This teaching material has been published pursuant to an undertaking given by the publisher that the content does not in any way whatsoever violate any existing copyright or intellectual property right. Extreme care is put into validating the veracity of the content in this book. However, if there is any error found, please do report to us on the below email and we will re-check; and if needed rectify the error immediately for the next print.

ATTENTION

No part of this publication may be re-produced, sold or distributed in any form or medium (electronic, printed, pdf, photocopying, web or otherwise) on Amazon, Flipkart, Snapdeal without the explicit contractual agreement with the publisher. Anyone caught doing so will be punishable by Indian law.

इस प्रकाशन का कोई भी हिस्सा प्रकाशक के साथ स्पष्ट संविदात्मक समझौते के बिना अमेज़न, फ्लिपकार्ट, स्नैपडील पर किसी भी रूप या माध्यम (इलेक्ट्रॉनिक, मुद्रित, पीडीएफ, फोटोकॉपी, वेब या अन्यथा) में फिर से उत्पादित, बेचा या वितरित नहीं किया जा सकता है। जो कोई भी ऐसा करता हुआ पकड़ा जाएगा, वह भारतीय कानून द्वारा दंडनीय होगा।

AGP contributes Rupee One on every book purchased by you to the **Friends of Tribals Society** Organization for better education of tribal children.

यह पेज अवश्य पढ़ें।

(जानिए हम आपकी परीक्षा की तैयारी में कैसे मदद करते हैं)

कुछ ही वर्षों में **Agrawal Examcart** की पुस्तकें शिक्षकों और छात्रों के बीच काफी लोकप्रिय हो गयी हैं। हमारे **Subject Experts** पुस्तकों की विषय सामग्री पर विशेष ध्यान देते हैं। परीक्षा के पाठ्यक्रमानुसार पाठ्यपुस्तकों और गाइडबुक्स के माध्यम से हम आपको **Syllabus-wise** सटीक और सरल भाषा में पुस्तकें प्रदान करते रहे हैं जिससे आपको कम समय में परीक्षा की तैयारी में मदद मिले। किसी भी परीक्षा सम्बन्धी **Practice set** को तैयार करते समय, हमारा उद्देश्य यही रहता है कि आप अपनी परीक्षा की तैयारी का स्वयं मूल्यांकन **90%** से अधिक सटीकता से कर सकें। यही कारण है कि प्रत्येक **Practice set** पिछले परीक्षा पैटर्न के अनुसार तैयार किया जाता है और इसमें बहुत अच्छे प्रश्नों का संग्रह होता है।

"हम आपके पुस्तक खरीदने से लेकर पुस्तक पूरा पढ़ने तक के सफर में हम आपके सारथि होंगे। इसीलिए हमने कुछ ऐसी सेवाएँ (नीचे दी गई) शुरू की हैं जिनकी मदद से हम आपकी सहायता कर पाएंगे।"

अपने Phone पर इस पुस्तक के संशोधित Updates प्राप्त करें!

हर बार जब हम इस पुस्तक में संशोधन या कोई भी नया **Update** करेंगे तो उसकी जानकारी हम आपके **Whatsapp Number** पर भेजेंगे जिससे आपको इस बुक का नया संस्करण न लेना पड़े और आपको **free** में **Updated Content** मिल जाये। इसके लिए आपको नीचे दिए हुए फॉर्म को भरना होगा जिससे हम आपको **Updated content** भेज पाएं। ध्यान दें कि फॉर्म भरते समय **Book Code** सही डालें नहीं तो आपको किसी और बुक के **Updates** मिलेंगे। बुक का कोड पुस्तक के पीछे कवर पर नीचे से बायीं तरफ दिया है जो **'CB'** से शुरू होता है।

Form link ☞ http://bit.ly/exmcrtrev or Scan Code ☞

Whatsapp Helpline No. (पुस्तक में गलती या परीक्षा सम्बन्धित जानकारी)

परीक्षाओं से सम्बन्धित किसी भी तरह की जानकारी जैसे—पाठ्यक्रम, पेपर पैटर्न, सबसे अच्छी पुस्तकें, परीक्षा सम्बन्धित महत्वपूर्ण **Dates**, किसी प्रश्न का हल एवं हमारी पुस्तकों में किसी भी तरह की गलती पाए जाने पर हमारे **Whatsapp Helpline** नंबर पर संपर्क करें। हमारी **Experts** की **Team** आपको उससे सम्बन्धित सही जानकारी उपलब्ध कराएगी।

Whatsapp number ☞ 8937099777 or Scan Code ☞

"सफलता बैच"

यहाँ selection एक जिद है।

'Examcart Live' आपके लिए लेकर आया है **'सफलता बैच'** जिसमें हमारे experts आपको **3 Points Strategy (Learn, Test and Re-Learn)** के माध्यम से **Daily Current Affairs, Maths** और **Reasoning** की live classes सभी परीक्षाओं के लिए अपने YouTube Channel पर लेंगे और साथ ही आपको Daily एवं Weekly quizzes **(Examcart App पर)** दी जाएँगी। इस Strategy के अनुसार पढ़ने पर आप किसी भी परीक्षा में इन विषयों के प्रश्नों को अति सरलता से हल कर पाएंगे।

Subscribe to our YouTube Channel 👉 **"Examcart Live"**

Join our Telegram Channel 👉 **"Examcart Live"**

Youtube Channel पर आगामी Online Classes का सम्पूर्ण schedule आपको रोज़ाना हमारे Telegram Channel पर दिया जाएगा।

आइए अब हमारे Social Media Platforms के साथ जुड़िए और अपनी तैयारी को और बेहतर बनाइए।

Scan	Scan	Scan
Subscribe to our YouTube Channel	Join our Telegram Channel	Follow our Instagram Page
"Examcart Live"	"Examcart Live"	"examcart_agp"
Daily Live Classes on Math and Reasoning for All Exams	Youtube Channel पर आगामी Online Classes का सम्पूर्ण schedule आपको रोज़ाना हमारे Telegram Channel पर।	Test Your IQ (Tricky Questions on Math and Reasoning)
Daily Current Affairs Classes	आगामी परीक्षाओं से सम्बंधित Best Books के Updates	Daily Reels on Math and Reasoning Questions
आगामी परीक्षाओं के Notifications एवं सम्बंधित नयी जानकारी के Updates	आगामी परीक्षाओं के सरलीकृत Notifications	Test Your Vocab (English Grammar पर महत्वपूर्ण प्रश्न)
परीक्षाओं के papers का Disscussion	Daily Free Online Quizzes की जानकारी	आगामी परीक्षाओं के सरलीकृत Notifications
आगामी परीक्षाओं के विगत वर्षों के पेपर्स एवं प्रैक्टिस पेपर्स पर Classes		Daily Current Affairs Reel

BEST DISCOUNTS पर Books को खरीदें हमारी Website से!

☞ **www.examcart.in**

Agrawal Examcart की सभी पुस्तकें हमारी Website पर काफी आकर्षक Discount पर उपलब्ध हैं। हम एक Promotional offer चला रहे हैं जिसके माध्यम से आप हमारी Website से प्रत्येक खरीदारी पर 5% अतिरिक्त छूट का और लाभ ले सकते हैं।

COUPON CODE ☞ EXAM2021

(5% extra discount पाने के लिए ऊपर दिए गए coupon code को checkout से पहले प्रयोग करें।)

Best Books

(केंद्र एवं सभी राज्यों की प्रतियोगी एवं प्रवेश परीक्षाओं के लिए उपयोगी)

'भारत की अधिकतम सरकारी परीक्षाओं में **सामान्य ज्ञान, गणित, हिंदी, तर्कशक्ति** और **English** जैसे विषयों से ही प्रश्न पूछे जाते है। प्रत्येक छात्र यही चाहता है कि इन सभी विषयों की एक ऐसी पुस्तक मिले जिसे पूरा पढ़ने पर वह किसी भी परीक्षा को आसानी से **Crack** कर सके। **Agrawal Examcart** की टीम ने काफी रीसर्च एवं सर्वेक्षण करने के बाद ऐसी ही प्रणाली पर पुस्तकें तैयार की है।'

नीचे ऐसी ही पुस्तकों का विवरण है और हर पुस्तक पर **QR code** दिया गया है जिसके माध्यम से आप पुस्तक का कुछ अंश पढ़कर इस बात की पुष्टि भी कर सकते है।

Scan

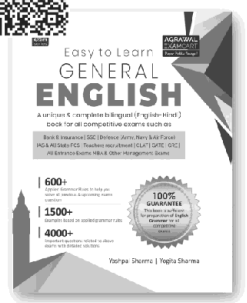

Scan

Scan

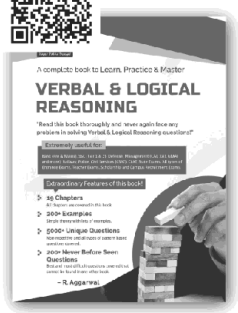

In press

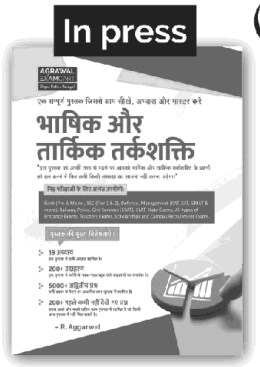

Scan

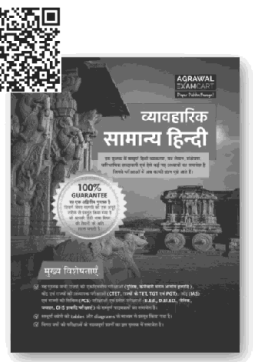

Scan

Scan

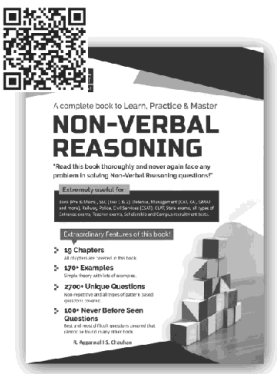

Scan

Scan

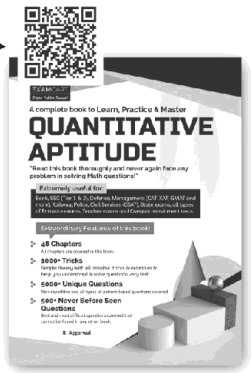

पुस्तक की विषय-सूची

पुस्तक विषय–सूची के अनुसार MPTET संस्कृत पाठ्यक्रम का विभाजन

अध्याय	पृष्ठ संख्या	
	(क) भाषायी समझ/अवबोध	
1. अपठित गद्यांश	1-9	• भाषायी समझ/अवबोध के लिए दो अपठित दिए जाएँ, जिसमें एक गद्यांश (नाटक/एकांकी/घटना/निबंध/कहानी आदि से) तथा दूसरा अपठित पद्य के रूप में हो, इस अपठित में से समझ/अवबोध, व्याख्या, व्याकरण एवं मौखिक योग्यता से संबंधित प्रश्न किए जाएँ। गद्यांश साहित्यिक/वैज्ञानिक/सामाजिक समरसता/तात्कालिक घटनाओं पर आधारित हो सकते हैं।
2. अपठित पद्यांश	10-16	
3. व्याकरण : वर्ण-परिचय, संज्ञा प्रकरणम्	17-23	
4. शब्द-विचार (सुबन्त-प्रकरण)	24-37	
5. विभिन्न वस्तुओं के संस्कृत में नाम (घर, परिवार, परिवेश, पशु, पक्षियों, घरेलू उपयोग की वस्तुएँ)	38-59	
6. सर्वनाम, विशेषण, लिंग तथा वाच्य-ज्ञान	60-81	
7. अव्यय पद	82-86	
8. सन्धि-प्रकरण	87-100	
9. समास प्रकरण:	101-112	
10. उपसर्ग	113-116	
11. प्रत्यय	117-131	
12. विलोम शब्द:	132-135	
13. पर्यायवाची शब्द:	136-138	
14. संस्कृत साहित्य का इतिहास	139-147	
15. कवियों एवं लेखकों की रचनाएँ	148-152	

पुस्तक की विषय–सूची	पुस्तक विषय–सूची के अनुसार MPTET संस्कृत पाठ्यक्रम का विभाजन

अध्याय	पृष्ठ संख्या	
(ख) भाषायी विकास हेतु निर्धारित शिक्षाशास्त्र		
16. संस्कृत भाषा शिक्षण	**153-200**	• भाषा सीखना और ग्रहणशीलता • भाषा शिक्षण के सिद्धान्त • भाषा शिक्षण में सुनने, बोलने की भूमिका, भाषा के कार्य, बच्चे भाषा का प्रयोग कैसे करते हैं • मौखिक और लिखित अभिव्यक्ति अन्तर्गत भाषा सीखने में व्याकरण की भूमिका • भाषा शिक्षण में विभिन्न स्तरों के बच्चों की चुनौतियाँ, कठिनाइयाँ, त्रुटियाँ एवं क्रमबद्धता • भाषा के चारों कौशल (सुनना, बोलना, पढ़ना, लिखना) का मूल्यांकन • कक्षा में शिक्षण अधिगम सामग्री, पाठ्य–पुस्तक, दूरसंचार (दृश्य एवं श्रव्य) सामग्री, बहुकक्षा स्रोत • पुनः शिक्षण

प्रैक्टिस सेट्स

- **प्रैक्टिस सेट–1** **1-11**
- **प्रैक्टिस सेट–2** **12-24**

अध्याय

1

अपठित गद्यांश

1. गद्यांश तथा उन पर आधारित प्रश्नोत्तर

I. गद्यांशः

शिवमूर्तिः हृदयाह्लादकः गायत्री-प्रसाद-सिंहः न तु केवलं सुल्तानपुरस्य अपितु भारतवर्षस्य आधुनिकेषु दार्शनिकेषु अन्यतमः अस्ति। तर्कविद्या-विशारदेन अनेन महाभागेन लिखितानि पुस्तकानि पठित्वा छात्राः न केवलं साफल्यं प्राप्नुवन्ति अपितु तर्कविद्यायां प्रावीण्यमपि लभन्ति।

शिक्षायाः क्षेत्रे शिक्षकरूपेण गायत्री-प्रसादेन या ख्याति-रुपार्जिता सा अन्येषां कृते सुदुर्लभा अस्ति। सम्प्रति तस्य शिष्येषु शताधिकाः प्रशासनिक अधिकारिणः, सहस्राधिका अध्यापकाश्च सन्ति। तस्य वाणी तु अमृतरूपेण कर्णकुहरे प्रविश्य नवजीवनं प्रददाति इति मन्ये। कस्यापि प्राध्यापकेन अथवा छात्रेण सह तस्य कदापि कोपि विवादः न जातः। श्रीविश्वनाथप्रसादेन तेन एका अलौकिका विद्या समुपार्जिता। येन प्रभावेण सः यस्य कस्य विषये यत्किमपि भविष्यवाणी कर्तुं शक्नोति। तस्य गुरुः श्री विश्वनाथपाण्डेयः वदति यत् तस्य हस्ते एका अपूर्वा रेखा अस्ति। यदा सा रेखा जीवनसंगिनी भविष्यति, जीवनरेखापर्यन्तं गमिष्यति वा तदा सः सर्वज्ञः भविष्यदिति। तस्य बालमित्रे ज्ञानेन्द्र-योगेन्द्रौ प्रतिदिनम् अस्य उपर्युक्त-रेखां पश्यन्ति वार्तां वा कुर्वन्ति। सा रेखाऽपि जीवनेन सार्द्धं गतिशीला अस्त्येव। तस्य गतिशीलतां दृष्ट्वा आशास्ये भविष्ये सा जीवनसंगिनी भविष्यत्येव।

1. अस्य परिच्छेदस्य शीर्षकं ददातु
(A) सुरेन्द्रसिंहः (B) विश्वनाथपाण्डेयः
(C) गायत्रीप्रसाद सिंहः (D) रेखा

2. दार्शनिकेषु अन्यतमः कः?
(A) योगेन्द्रसिंहः (B) विश्वनाथपाण्डेयः
(C) ज्ञानेन्द्रसिंहः (D) गायत्रीप्रसादसिंहः

3. गायत्रीप्रसादस्य पितुः नाम
(A) शिवमूर्तिः (B) विश्वनाथपाण्डेयः
(C) विश्वनाथप्रसादः (D) हृदयाह्लादकः

4. 'रेखा' कस्य हस्ते अस्ति?
(A) विश्वनाथस्य (B) गायत्रीप्रसादस्य
(C) योगेन्द्रस्य (D) ज्ञानेन्द्रस्य

5. का जीवनसंगिनी भविष्यत्येव?
(A) विश्वनाथस्य भविष्यवाणी
(B) गतिशीला
(C) सा रेखा
(D) विद्या

II. गद्यांशः

भारते अनेकाः पुण्यप्रदाः मङ्गलकारिण्यः नद्यः सन्ति, तासु गङ्गानदी पवित्रतमो कथ्यते। भारतीयजनानां हृदि विश्वासः अस्ति यद् अस्यां नद्यां स्नानेन नरः पापाद् विमुच्यते। गङ्गानदी मुक्तिदायिनी अस्ति। गङ्गानद्याः जलम् औषधिगुणेन युक्तम् अमृततुल्यं भवति। भागीरथी- जाह्नवी- सुरनदी-सुरसरितादीनि गङ्गानद्याः एव नामानि सन्ति। महाराजभगीरथः स्वपूर्वजानाम् उद्धाराय भगवन्तं प्रार्थयत् गङ्गानदीं च पृथिव्याम् आनयत्। ततः प्रभृति एषा भागीरथी इति नाम्ना प्रसिद्धा अभवत्। गङ्गानदी हिमालयस्य गङ्गोत्री नामकस्थानात् उद्गच्छति।

गङ्गानद्याः तटे हरिद्वारं प्रयागः वाराणसी च प्रसिद्धानि तीर्थस्थानानि सन्ति। यत्र जनाः श्रद्धया स्नानं कुर्वन्ति। सायंकाले जनाः नौका-विहारम् अपि कुर्वन्ति। देवदीपावल्यां जनाः प्रज्वलितान् दीपान् नद्याः जले विसृजन्ति। दीपानां प्रकाशेन दृश्यं मनोहरम् अनुपमं च भवति। एवमेव भारते अन्यासामपि नदीनां महत्त्वम् अस्ति। भारतीयाः नदीनां पूजनं देवतारूपेण कुर्वन्ति।

6. पवित्रतमा नदी का अस्ति?
(A) सरस्वती (B) यमुना
(C) गंगा (D) ब्रह्मपुत्र

7. कस्याः नाम 'सुरसरिता' इत्यस्ति?
(A) सरस्वत्याः (B) भागीरथ्याः
(C) सूर्यसुतायाः (D) यमुनायाः

8. 'वाराणसी' कस्याः तटे अस्ति?
(A) रेवायाः (B) नर्मदायाः
(C) यमुनायाः (D) जाह्नव्याः

9. भारतीयाः नदीनां पूजनं केन रूपेण कुर्वन्ति?
(A) जलरूपेण (B) देवतारूपेण
(C) पर्यावरणरूपेण (D) गंगारूपेण

10. मुक्तिदायिनी का अस्ति?
(A) भागीरथी (B) कालिन्दी
(C) ब्रह्मपुत्र (D) शारदा

III. गद्यांशः

महामनस्विनः मदनमोहनमालवीयस्य जन्म प्रयागे प्रतिष्ठित परिवारेऽभवत्। अस्य पिता पण्डितव्रजनाथमालवीयः संस्कृतस्य सम्मान्यः विद्वान आसीत्। अयं प्रयागे एव संस्कृतपाठशालायाम् राजकीयविद्यालये म्योरसेण्ट्रलः महाविद्यालये च शिक्षां प्राप्य अत्रैव राजकीय विद्यालये अध्यापनम् आरब्धवान्। युवकः मालवीयः स्वकीयेन प्रभावपूर्ण भाषणेन जनानां मनांसि अमोहयत्। अतः अस्य सुहृदः तं प्राड्विवाकपदवीं प्राप्य देशस्य श्रेष्ठतरां सेवां कर्तुं प्रेरितवन्तः। तदनुसारम् अयं विधिपरीक्षामुत्तीर्य प्रयागस्ये उच्चन्यायालये प्राड्विवाककर्म कर्त्तुमारंभत। विधेः प्रकृष्टज्ञानेन मधुरालापेन उदारव्यवहारेण चायं शीघ्रमेव मित्राणां न्यायाधीशानाञ्च सम्मानभाजनमभवत्।

महापुरुषाः लौकिक-प्रलोभनेषु बद्धाः नियतलक्ष्यान्न कदापि भ्रश्यन्ति। देशसेवानुरक्तोऽयं युवा उच्च-न्यायालस्य परिधौ स्थातुं नाशक्नोत्। पण्डित मोतीलालनेहरू लालालाजपतरायप्रभृतिभिः अन्यैः राष्ट्रनायकैः सह सोऽपि देशस्य स्वतन्त्रता-संग्रामेऽवतीर्णः। देहल्यां त्रयोविंशतितमे कांग्रेसस्याधिवेशनेऽयम् अध्यक्षपद-मलङ्कृतवान्। 'रोलट एक्ट' इत्याख्यस्य विरोधेस्य ओजस्विभाषणं श्रुत्वा आङ्ग्लशासकाः भीताः जाता। बहुवारं कारागारे निक्षिप्तोऽपि अयं वीरः देशसेवाव्रतं नात्यजत्।

हिन्दी-संस्कृताङ्ग्लभाषासु अस्य समानः अधिकारः आसीत्। हिन्दी- हिन्दुहिन्दुस्थानानामुत्थानाय अयं निरन्तर प्रयत्नमकरोत्। शिक्षायैव देशे समाजे च नवीनः प्रकाशः उदेति अतः श्रीमालवीयः वाराणस्यां काशीविश्वविद्यालयस्य संस्थापनमकरोत्। अस्य निर्माणायअयं जनान् धनम् अयाचत् जनाश्च महत्यस्मिन् ज्ञानयज्ञे प्रभूतं धनमस्मै प्रायच्छन् तेन निर्मितोऽयं विशालः विश्वविद्यालयः भारतीयानां दानशीलतायाः श्रीमालवीयस्य यशसः च प्रतिमूर्तिरिव विभाति। साधारणस्थितिकोऽपि जनः महतोत्साहेन मनस्वितया पौरुषेण च असाधारणमपि कार्य कर्तुंक्षमः इत्युदर्शयत् मनीषिमूर्धन्यः मालवीयः। एतदर्थमेव जनास्तं महामना इत्युपाधिना अभिधातुमारब्धवन्तः।

महामना विद्वान् वक्ता धार्मिको नेता, पटुः पत्रकारश्चासीत्। परमस्य सर्वोच्चगुणः जनसेवैव आसीत्। यत्र कुत्रापि अयं जनान् दुःखितान् पीड्यमानांश्चापश्यत् तत्रैव सः शीघ्रमेव उपस्थितः सर्वविधं साहाय्यञ्च अकरोत्। प्राणिसेवा अस्य स्वभाव एवासीत्।

अद्यास्माकं मध्येऽनुपस्थितोऽपि महामना मालवीयः स्वयशसोऽमूर्तरूपेण प्रकाशं वितरन् अन्धे तमसि निमग्नान् जनान् सन्मार्गं दर्शयन् स्थाने स्थाने, जने जने उपस्थित एव।

11. श्री मालवीयः कीदृशः पुरुषः आसीत्?
(A) अशिक्षितः (B) कठोरः
(C) मधुरभाषी (D) उदारः

12. महामनस्विनः जन्मकुत्र अभवत्?
(A) मयराष्ट्रः (B) प्रयागनगरे
(C) बनारसेः (D) लखनऊ

13. मालवीय महोदयः कस्मिन् वर्षे काँग्रेसस्य अध्यक्षः अभवत्?
(A) विंशः (B) एकोनिवशः
(C) अष्टादशः (D) त्रयोविंशतितमे

14. श्री मालवीयस्य चरित्रे कः सर्वोच्च गुणाः आसीत्?
(A) धनसेवा (B) जनसेवा
(C) विद्वानसेवा (D) मनसेवा

IV. गद्यांशः

महाकविः कालिदासः संस्कृतकवीनां मुकुटमणिरस्ति। न केवलं भारतदेशस्य अपितु समग्रविश्वस्योत्कृष्टकविषु स एकतमोऽस्ति। तस्यानवद्या कीर्तिकौमुदी देशदेशान्तरेषु प्रसृतास्ति। भारतदेशे जन्म लब्ध्वा स्वकविकर्मणा देववाणी–मलङ्कुर्वाणः स न केवल भारतीयः कविः अपि तु विश्वकविरिति सर्वैराद्रियते।

वाग्देवताभरणभूतस्य प्रथितयशसः कालिदासस्य जन्म कस्मिन् प्रदेशे, काले कुले चाभवत्, किञ्चासीत् तज्जन्मवृत्तम् इति सर्वमधुनापि विवादिकोटिं नातिक्रामति। इतरकवय इव कालिदासः आत्मज्ञापने स्वकृतिषु प्रायः धृतमौन एवास्ति। अन्येऽपि कवयस्तन्नामसंकीर्तनमात्रादेव स्वीयां वाचं धन्यां मत्वा मौनमवलम्बन्ते। तथापि अन्तर्बहिस्साक्ष्यमनुसृत्य समीक्षकाः कविपरिचयं यावच्छक्यं प्रस्तुवन्ति।

15. संस्कृत कवियों में कालिदास को कहा गया है–
(A) विद्वान् (B) मुकुटमणिः
(C) मूर्खः (D) इनमें से कोई नहीं

16. समग्र विश्व के श्रेष्ठ कवियों में किसे प्रमुख माना गया है?
(A) भारवि को (B) भास को
(C) वाल्मीकि को (D) कालिदास को

17. 'देशान्तरेषु' में विभक्ति वचन है–
(A) प्रथमा बहुवचन (B) षष्ठी बहुवचन
(C) सप्तमी बहुवचन (D) सप्तमी एकवचन

18. 'एकतम' में प्रत्यय है–
(A) तरप् (B) तमप्
(C) ण्यत् (D) क्त

19. 'अस्ति' में लकार है–
(A) लट्लकार (B) लोट्लकार
(C) लृट्लकार (D) लङ्लकार

V. गद्यांशः

परिच्छेदं पठित्वा प्रश्नस्य शुद्धमुत्तरं सूचयत–

इन्दुः रात्रौ उदयते। इन्दोः प्रकाशः चन्द्रिका। चन्द्रिकायाः ज्योत्स्ना, कौमुदीति अपरे नामनी। सा शीतला आह्लादकरी च वर्तते।

सूर्यस्य प्रकाशः स्वकीयः। विधोः प्रकाशः परकीयः। अयं रवेः लभते प्रकाशम्। अतः शीतलः। चन्द्रः भूमिं परितः प्रदक्षिणं करोति। एकेन मासेन एतत्पूर्णं भवति। पूर्णिमायां चन्द्रस्य बिम्बम् आरक्तं भवति। ततः दिने दिने क्षीयते विधुः। तदा कृष्णपक्षः भवति।

चन्द्रस्य षोडशकलाः सन्ति। तस्य कलामेकां धूर्जटिः शीर्षे वहति। अतः सः चन्द्रशेखरः इति प्रसिद्धः। अमावस्यायां चन्द्रस्य न कापि कला दृश्यते गगने। पुनः प्रतिपदारभ्य क्रमेण सः वर्धते। तदा शुक्लपक्षः भवति।

चन्द्रः सूर्यः च परमेश्वरस्य द्वे नेत्रे। सः एताभ्यां नेत्राभ्यां जनानां व्यवहारं पश्यति। ये साधु कर्म कुर्वन्ति ते तस्य प्रियाः भवन्ति।

20. इन्दुः कदा उदयते ?
(A) सायं (B) प्रातः
(C) मध्याह्ने (D) रात्रौ

21. कस्य प्रकाशः स्वकीयः ?
(A) चन्द्रस्य (B) देवस्य
(C) राज्ञः (D) सूर्यस्य

22. सूर्यचन्द्रौ कस्य नेत्रे ?
(A) राज्ञः (B) स्वस्य
(C) परमेश्वरस्य (D) ऋषेः

23. कस्य प्रकाशः परकीयः ?
(A) देवस्य (B) सूर्यस्य
(C) राज्ञः (D) चन्द्रस्य

24. चद्रिका कीदृशी वर्तते ?
(A) कदुष्णा (B) उष्णा
(C) शीतला (D) शीतोष्णा

VI. गद्यांशः

परिच्छेदं पठित्वा प्रश्नस्य शुद्धमुत्तरं सूचयत–

वयं भारतदेशे निवसामः। तस्मात् वयं भारतीयाः स्मः। अस्माकं संस्कृतिः भारतीयसंस्कृतिः। रामायणं भारतीयसंस्कृतेः आकरः ग्रन्थः। अस्य रचयिता महर्षिः वाल्मीकिः।

प्राचीनभारतस्य सुप्रसिद्धा नगरी अयोध्या। तत्र सूर्यवंशीयः दशरथो नाम राजा आसीत्। तस्य कुलगुरुः वसिष्ठः अमात्यश्च सुमन्त्रः आसीत्। दशरथस्य तिस्रः भार्याः आसन्। ताश्च कौसल्या, सुमित्रा, कैकेयी च। कौसल्यायाः सुतः श्रीरामः। लक्ष्मणशत्रुघ्नौ सुमित्रायाः तनयौ। दशरथपुत्रेषु कनिष्ठस्य भरतस्य माता कैकेयी।

बाल्ये एव रामलक्ष्मणौ महर्षिविश्वामित्रेण सह यागरक्षणार्थवनम् अगच्छताम्। तत्र तौ ताड़का– सुबाहु–प्रभृतीन् राक्षसान् अमारयताम्। ततः श्रीरामः शिवचापं भित्त्वा सीतायाः पाणिग्रहणम् अकरोत्।

पितृः आज्ञया श्रीरामः सीतालक्ष्मणाभ्यां सह वनम् अगच्छत्। तत्र सः अनेकानि कष्टानि अन्वभवत्। रावणः सीताम् अपाहरत्। सीतान्वेषणावसरे सुग्रीवस्य मैत्रीम् अलभत। सुग्रीवस्य समस्यां परिहृत्य पुनः सीतान्वेषणम् अकरोत्।

25. श्रीरामः कं भित्त्वा सीतायाः पाणिग्रहणम् अकरोत्।
(A) ब्रह्मचापं (B) शिवचापं
(C) विष्णुचापं (D) इन्द्रचापम्

26. दशरथस्य कति भार्याः ?
(A) षट् (B) तिस्र
(C) चतस्रः (D) पञ्च

27. सुमित्रायाः तनयौ कौ?
(A) भरतलक्ष्मणौ (B) लक्ष्मणशत्रुघ्नौ
(C) भरतशत्रुघ्नौ (D) रामलक्ष्मणौ

28. रामायणग्रन्थस्य रचयिता कः ?
(A) व्यासः (B) भासः
(C) कालिदासः (D) वाल्मीकिः

29. दशरथस्य वंशः कः ?
(A) सूर्यः (B) कुरुः
(C) पुरुः (D) चन्द्रः

VII. गद्यांशः

परिच्छेदं पठित्वा प्रश्नस्य शुद्धमुत्तरं सूचयत–

अस्य महानुभावस्य जन्म 20 आगस्ट्, 1944 तमे वर्षे मुम्बैपुर्याम् अभवत्। अस्य पिता फिरोज गांधी माता च श्रीमती इंदिरा गांधी आस्ताम्। को न जानाति यत् इन्दिरा श्रीमतः जवाहरलालस्य पुत्री आसीत्। राजीवस्य प्रारम्भिकी शिक्षा दिल्ली नगरे, देहरादूननगरे च अभवत्। उच्चशिक्षायै अयं इंग्लैंड देशं गत्वा ट्रिनिटी महाविद्यालये प्रवेशमलभत। शिक्षानन्तरं भारतं प्रतिनिवृत्य अयं विमानचालकपदे प्रतिष्ठितः अभवत् अस्य विवाहः सोनियानामिकया इटालियन् कुमार्या सह अभवत्। अस्य एकः पुत्रः अस्ति राहुलः, एका च कन्या अस्ति प्रियाङ्का। यदा वायुदुर्घटनायाम् अस्य कनिष्ठः भ्राता संजयगांधी मृत्युमुपागतः तदा अयं त्यागपत्रं दत्वा कांग्रेससंस्थायाः

प्रधानसचिवः अभवत्। 31 अक्टोबर्, 1984 तमे वर्षे राजीवस्य माता भारतस्य प्रधानमन्त्री उग्रवादिभिः गोलिकाभिः हता। तदा श्री राजीवः प्रधानमंत्री अभवत्। नवीने चयने बहुमतं प्राप्य अयं पुनः प्रधानमन्त्री पदे प्रतिष्ठितः। पञ्जाब–प्रदेशस्य, अस्याम्– प्रदेशस्य च समस्यायाः समाधानं कृत्वा अयं बहुशः लोकप्रियः जातः। अयं मधुरभाषी, शान्तिप्रियः, मेधावी, सहृदयश्च आसीत्।

30. एषः राजीवगांधी महोदयस्य पिता–

(A) जीवा गांधी
(B) संजय गांधी
(C) महात्मा गांधी
(D) फिरोज गांधी

31. दिल्ली देहरादूननगरे च अस्य किमभूत् ?

(A) प्राथमिकशिक्षणम्
(B) उपनयनम्
(C) विवाहः
(D) प्रौढ़शिक्षणम्

32. राजीवगांधी कदा प्रधानमन्त्री अभवत् ?

(A) मातुः मरणानन्तरम्
(B) विवाहानन्तरम्
(C) पितुः मरणानन्तरम्
(D) भ्रातुः मरणानन्तरम्

33. ''जातः'' इत्यत्र अयं प्रत्ययः भवति–

(A) अनीयर् (B) क्तवतुः
(C) क्तः (D) यत्

34. राजीवस्य पितामहः एषः अस्ति–

(A) महात्मा गांधी (B) करमचन्दः
(C) फिरोज गांधी (D) जवाहरलालः

परिच्छेदं पठित्वा प्रश्नस्य शुद्धमुत्तरं सूचयत–

अहं कोऽस्मि? अहं रूप्यकमस्मि। मम द्वे रूपे स्तः। एकं तु मुद्रायाः रूपम्, यत् संसारे 'सिक्का' इति नाम्ना प्रचलितः। द्वितीयं तु 'नोट्' कागजस्य (कर्गजस्य) रूपम् अस्ति। मम मूल्यं न केवलं एकं रुप्यकम् अस्ति, अपितु द्विः, पञ्च, दश, शतम्, रुप्यकपर्यन्तम् अपि अस्ति। सर्वे जानन्ति यत् मम जन्म भारतस्य देशस्य 'टङ्कसाले' भवति। तत् पश्चात् कर्मचारिणः भारतीय–रिसर्वब्यांकस्थले माम् अन्यैः। मम बन्धुभिः सहोदरैः च सह आनयन्। रिसर्वब्यांक्तः माम् अन्येभ्यः यच्छन्ति। मम मनसि उदासीनता जायते यतः स्वच्छवायुः ब्यांकस्थलेषु न आगच्छति। यदा अहं ब्यांकस्थलात् आपणेषु आगच्छामि तदा मम हृदयम् आनन्दसागरे दौलायते। स्वच्छवायौ अहं स्वपिमि। अहं गगनचुम्बिभवनानि पश्यामि। अनेकानि वस्तूनि च पश्यामि। अहम् अनेकान् पुरुषान् मिलित्वा सुखमनुभवामि।

कश्चित् कठोरहृदयः पुरुषः मां काष्ठमय्यां लौहमय्यां वा मञ्जूषायां स्थापयति। कश्चित् मां 'स्वकोषे' स्थापयति। मां दृष्ट्वा बालाः शिशवः च अतीव प्रसीदन्ति। ते मां गृहीत्वा आपणं गच्छन्ति। मृष्टान्नानि क्रीत्वा च भक्षयन्ति। भीमोदरः वणिक् मां लोहस्य मञ्जूषायां स्थापयति। तदा तु अहं दुःखमनुभवामि। इदं जगत् तु नश्वरमस्ति अतः एकस्मिन् दिने अहं तु जीर्णः भवामि। यथा जनाः मृतं पुरुषं गृहीत्वा श्मशानक्षेत्रं गच्छन्ति तथैव मामपि जीर्णशीर्णावस्थायां गृहीत्वा केचित् नराः रिसर्वब्यांकस्थमायान्ति।

35. अत्र स्वच्छवायुः न आगच्छति–

(A) ब्यांकस्थलेषु (B) वाहनेषु
(C) मार्गेषु (D) वनेषु

36. 'पश्चात्' इत्यस्मिन्नर्थे अत्र कः शब्दः प्रयुक्तः?

(A) अद्य (B) श्वः
(C) अनन्तरम् (D) अधुना

37. उदासीनता' अत्र प्रत्ययोऽस्ति–

(A) तल् (B) क्त
(C) तव्यत् (D) शतृ

38. अस्य द्वे रूपे स्तः–

(A) संसारस्य (B) देहस्य
(C) रुप्यकस्य (D) आत्मनः

39. मुद्रणालयः इत्यस्मिन्नर्थे अत्र कः शब्दः प्रयुक्तः?

(A) कुलालः (B) टंकसालः
(C) विशालः (D) रसालः

VIII. गद्यांशः

परिच्छेदं पठित्वा प्रश्नस्य शुद्धमुत्तरं सूचयत–

सप्ततिवर्षमये वार्धक्ये अपि दादाजिकोण्डदेवः कर्तव्यनिष्ठाविषये अनुशासनविषये च बद्धादरत्वेन ख्यातः। तस्मिन् काले पुणे नगरं परितः स्थितं मावलप्रदेशं स्थानीयाः देशमुखाः एव पालयन्ति स्म। स्वार्थपराः दुरभिमानिनः विलासप्रियाश्च ते स्वधर्मीयेषु एव भीकरं दौर्जन्यम् अत्याचारं च प्रदर्शयन्ति स्म। बिजापुरशासकस्य अधीनाः सन्तः ते जनानां शोषणं कुर्वन्ति स्म। कोण्डदेवः आदौ तत उर्ध्वस्तं जनजीवनं समीकर्तुम् इष्टवान्। अतः सः दण्डार्हान् उग्ररूपेण दण्डितवान्। कृषकाणां रक्षणं प्रतिज्ञाय कृषेः प्रोत्साहनं कृतवान्। गच्छता कालेन द्वादशसु अपि मावलाधीनेषु प्रदेशेषु सुव्यवस्था अगता। पुणे नगरं प्रति आगमनानन्तरं दादाजिः गणपतेः प्रतिष्ठापनां कारयित्वा मन्दिरं निर्मापितवान्। शिवराजस्य वासार्थं 'शोणभवनम्' निर्मापितवान्।

40. कोण्डदेवः दण्डार्हान् कथं दण्डितवान् ?

(A) कुशलरूपेण (B) शस्त्रेण
(C) मृदुस्वभावेन (D) उग्ररूपेण

41. किमर्थं कोण्डदेवः शोणभवनं निर्मापितवान्?

(A) सैनिकार्थम् (B) राजार्थम्
(C) शिवराजार्थम् (D) अमात्यार्थम्

42. स्थानीयाः देशमुखाः कीदृशाः असन् ?

(A) दानिनः (B) दुर्जनाः
(C) सज्जनाः (D) कुशलाः

43. दादाजिः किं निर्मापितवान् ?

(A) गृहम् (B) शालाम्
(C) मन्दिरम् (D) काननम्

44. दादाजिकोण्डदेवः अनेन गुणेन ख्यातः आसीत्?

(A) त्यागेन (B) दानेन
(C) विनयेन (D) अनुशासनेन

IX. गद्यांशः

परिच्छेदं पठित्वा प्रश्नस्य शुद्धमुत्तरं सूचयत–

अथ किमिदं विज्ञानम् नाम? तत्र उच्यते–भौतिकानां पदार्थानां विशेषतः ज्ञानं विज्ञानम्। सामान्यतः पदार्थजातस्य गुण–दोष–स्वभाव–प्रवृत्ति–उपयोगिता–प्रयोग–अप्रयोगं तु जनाः जानन्त्येव। किन्तु यः पदार्थानां विशेषाणां गुणानाम् अन्वेषणं करोति स तेषां विशिष्टां शक्तिं ज्ञातुं योग्यः भवति, तं 'वैज्ञानिकं' वदन्ति जनाः। आधुनिकेन विज्ञानेन संसारस्य स्वरूपमेव परिवर्तितम्। अद्य बाष्पेण रेलयन्त्रं चाल्यते, पेट्रोलेन मोटर–यानम् वायुयानं च। विद्युता प्रकाशः क्रियते, व्यजनानि वीज्यन्ते, नानायन्त्राणि चाल्यन्ते। विज्ञानस्य कृपया अधुना मनुष्यः एकेन होराकालेन क्रोशानां सहस्राणां यात्रां कर्तुमर्हति। एवं संसारस्य देशाः परस्परं निकटीकृताः विज्ञानेन। आकाशवाण्या शब्दस्य दूरसञ्चारणं क्रियते। एतेन साधनेन अद्य वयं विश्वस्य समाचारान्, गीतानि, वाद्यानि, भाषणानि च श्रोतुं समर्थाः स्मः। विज्ञानस्यैव कृपया वयं चलच्चित्राणि द्रष्टुं समर्थाः, एक्सरे इत्यस्यायं चमत्कारः यद् वयं शरीरान्तरे अस्थिगतमपि दोषं ज्ञातुं समर्थाः। अणुवीक्षण–यन्त्रेण वयं सूक्ष्मतमं वस्तुजातं द्रष्टुं शक्नुमः। दूरवीक्षण–यन्त्रेण वयं ग्रहनक्षत्राणि

द्रष्टुमर्हाः। विज्ञानेन परमाणोरपि तत्त्वं परिज्ञातम्। एतेन मुनष्यः महत्या शक्त्या परिचितः अभवत्।

45. वायुयानं चालयितुं इदमवश्यकम्–

(A) चक्रम् (B) पैलट्
(C) सौरयन्त्रम् (D) पेट्रोल्

46. अनेन कारणेन देशस्य परस्परं सम्बन्धाः निकटीकृताः–

(A) धान्यस्य (B) धनस्य
(C) यन्त्रस्य (D) विज्ञानस्य

47. अनेन साधनेन विश्वस्य समाचारान्, वाद्यानि, भाषणानि श्रोतुं समर्थाः वयम्–

(A) दूरवाणी (B) दूरदर्शनम्
(C) आकाशवाणी (D) मस्तिष्कयन्त्रम्

48. सूक्ष्मतमम्–इत्यत्र विद्यमानः प्रत्ययः–

(A) तरप् (B) तमप्

(C) मतुप् (D) अण्

49. भौतिकानां पदार्थानां विशेषतः ज्ञानमेव.....

(A) भौतशास्त्रम् (B) परमाणुशास्त्रम्

(C) पदार्थज्ञानम् (D) विज्ञानम्

X. गद्यांशः

परिच्छेदं पठित्वा प्रश्नस्य शुद्धमुत्तरं सूचयत–

एषः कश्चन ग्रामः । अस्य ग्रामस्य नाम ऋष्यशृङ्गपुरम् इति। अस्य नामान्तरं 'किग्ग' इति। अयं शृङ्गेरीतः द्वादशकिलोमीटर् दूरे अस्ति। अयं चिक्कमगलूरुमण्डले अस्ति। एषः इतिहासप्रसिद्धः अस्ति। अत्र विभाण्डकपुत्रस्य ऋष्यशृङ्गस्य देवालयः अस्ति। ऋष्यशृङ्गः 'वृष्टिदेवः' इत्येव प्रसिद्धः। देवस्य दर्शनार्थं यात्रार्थिनः आगच्छन्ति। चैत्रे मासे देवस्य रथोत्सवः भवति। शिवलिङ्गस्य उपरि शृङ्गद्वयं विराजते। देवस्य वामतः विराजते तस्य पत्नी शान्ता। तस्य दक्षिणतः द्विभुजः गणपतिः अस्ति। देवस्य पुरतः नन्दी विराजते।

ग्रामस्य अनतिदूरे कश्चन पर्वतः अस्ति। पर्वतस्य नाम नृसिंहपर्वतः इति। पर्वतं प्रति गन्तुं वनाधिकारिणाम् अनुमतिः आवश्यकी। पर्वतात् पञ्च नद्यः उद्भवन्ति। तासाम् अधः गमनाय दर्शनाय च मनः स्पृहयति। अयं समुद्रतलात् 826 पादोन्नते प्रदेशे अस्ति। अत्र सरोवरद्वयम् अपि वर्तते। पर्वतस्य शिखरे स्थित्वा सूर्यास्तस्य दृश्यं द्रष्टुं शक्यते। अत्रस्थं वनं नित्यहरिद्वर्णं भवति।। पर्वतस्य उपरि हरितानि तृणानि वर्तन्ते। अस्मिन् वने व्याघ्रा भल्लूकाः च सन्ति। ग्रामं निकषा एका नदी वहति। तस्याः नाम नन्दिनी इति। नदीम् उभयतः अनेके ग्रामाः सन्ति। ग्रामं समया 'सिरिमने' जलपातः विद्यते।

50. शिवलिङ्गस्य उपरि किम् विराजते?

(A) शिवचापं (B) शृङ्गद्वयं

(C) विष्णुचापं (D) इन्द्रचापम्

51. वृष्टिदेवः इति कः प्रसिद्धः ?

(A) इन्द्रः (B) ऋष्यशृङ्गः

(C) विष्णुः (D) शिवः

52. अत्र कस्य पुत्रस्य ऋष्यशृङ्गस्य देवालयः अस्ति ?

(A) गौतमस्य (B) विश्वामित्रस्य

(C) विभाण्डकस्य (D) कश्यपस्य

53. ऋष्यशृङ्गस्य रथोत्सवः कदा भवति ?

(A) माघमासे (B) वैशाखमासे

(C) चैत्रे मासे (D) भाद्रपदमासे

54. ऋष्यशृङ्गपुरम् कुत्र अस्ति ?

(A) चिक्कमगलूरुमण्डले

(B) उडुपिमण्डले

(C) मैसूरुमण्डले

(D) मण्ड्यमण्डले

XI. गद्यांशः

परिच्छेदं पठित्वा प्रश्नस्य शुद्धमुत्तरं सूचयत–

नवम्–एष्यन्–क्रीडाः 1982 क्रिस्तशताब्दे नवम्बरमासस्य नवदशतिथौ भारतदेशस्य राजधान्यां दिल्लीनगरे अभवन्। एषः दिवसः इन्दिरागांधीमहोदयायाः जन्मदिनरूपेण अपि प्रसिद्धः वर्तते। आसु प्रतियोगितासु त्रयस्त्रिंशत् देशाः प्रतिभागिनः आसन्। यैः द्वाविंशति क्रीडानाम् अद्भुतम् आकर्षणं च प्रदर्शनं कृतम्। क्रीडानाम् उद्घाटनं जवाहरलाल नेहरूस्टेडियम्क्षेत्रे प्रातः नववादनकाले राष्ट्रपतिना श्री ग्यानि जाइल् सिंग् महोदयेन संगीतस्य मधुरध्वनिना कृतम्। ततः अध्यक्षमहोदयेन श्री भालेन्द्रसिंहेन सर्वेषाम् अतिथीनां स्वागतं कृतम्। तत्पश्चात् सुश्री डैना सैमन् महोदयया श्री बलवीरसिंहेन च स्वकरकमलाभ्यां क्रीडानां दीपशिखा प्रज्वालिता। विविध–देशानां प्रतिनिधिभिः प्रतिभागिभिः च निजपरिचयदानहेतुः स्वराष्ट्रीयध्वजैः सह अतीवशोभनं पथसंचलनं कृतम्। सहस्रसंख्याकाः कपोताः वायुपूरितरबरगोलकाः (गुब्बाराः) च आकाशे मुक्ताः। राष्ट्रगीतस्योपरान्तं क्रीडानां प्रतीकात्मकस्य चिह्नस्य ''अप्पू'' इति नाम्नः गजशिशोः वायुपूरिततमा प्रतिकृतिः गगने विमोचिता। एतद् दृष्ट्वा सम्पूर्णं वातावरणं करतलध्वनिभिः प्रतिध्वनितम् अभवत्। नवम–एष्यन्–क्रीडानां द्वितीयं चिह्नम् ऐतिहासिकस्थलं जन्तर्–मन्तर् आसीत्। अस्य आकारः नमस्कारं कुर्वतः नरस्य आकृतिसदृशं वर्तते, यः आगन्तुकानाम् अतिथीनां स्वागतं सूचयति।

काश्चित् क्रीडाः पंचदशदिवसेभ्यः दिल्लीमुम्बईजयपुरनगरेषु सममेव अभवन्। दिल्लीनगरस्य सर्वाणि पुरातनानि नवनिर्मितानि च स्टेडियमक्षेत्राणि तु आभूषितानि सज्जितानि आसन्। अतिरिक्त–राजपुरुषाणां सहयोगेन अनुशासनस्य विशेषः प्रबन्धः आसीत्। इत्थमेव यातायातसुविधार्थं अतिरिक्तबदसेवा प्रचलिता अभवत्। नईदिल्ली नगरं विशेषरूपेण स्वच्छं सज्जितं चासीत्।

अस्मासु क्रीडा–प्रतियोगितासु चैनादेशः सर्वाधिकान् स्वर्णपदकान् अजयत्। जपान्देशः द्वितीयस्थानं कोरिया च तृतीयस्थानम् अलभत। भारतदेशः अपि पंचमं स्थानं गृहीत्वा गौरवं प्राप्नोत्। दिसम्बरमासस्य चतुर्थीतिथौ विशालः समापनसमारोहः आयोजितः। रविशंकरमहोदयस्य मधुर–संगीतध्वनिभिः सार्धम् सांस्कृतिककार्यक्रमैः नृत्यगानादिभिः सर्वेषाम् आगन्तुकानां भृशं मनोरंजनम् अभवत्। अन्ते

क्रीडामन्त्रिमहोदयेन श्रीबूटासिंहेन सर्वेषां प्रतिभागिनां धन्यवादः कृतः। पारितोषिकान् प्राप्य सर्वे प्रतियोगिनः सहर्षं स्व–स्वदेशम् अगच्छत्।

55. क्रीडानाम् उद्घाटनम् अत्र समभवत्–

(A) मध्यप्रदेशे

(B) जवाहरलाल नेहरू स्टेडियम्

(C) दिल्लीनगरे

(D) उत्तरप्रदेशे

56. सह अव्यययोगे एषा विभक्तिः प्रयोक्तव्या–

(A) पञ्चमी (B) द्वितीया

(C) तृतीया (D) चतुर्थी

57. नवम एष्यान् क्रीडायां एतावन्तः देशाः प्रतिभागिनः आसन्–

(A) पञ्चविंशति (B) अष्टादश

(C) त्रयस्त्रिंशत् (D) द्वात्रिंशत्

58. सह अव्यययोगे एषा विभक्तिः प्रयोक्तव्या–

(A) जवाहरलाल नेहरू

(B) इन्दिरागांधी

(C) ज्ञानिजैलसिंह

(D) भालेन्द्रसिंह

59. कृतम् इत्यत्र अयं कृत्प्रत्ययः भवति–

(A) तल् (B) क्तवतु

(C) झल् (D) क्तः

XII. गद्यांशः

परिच्छेदं पठित्वा प्रश्नस्य शुद्धमुत्तरं सूचयत–

कावेरी कर्णाटकस्य जीवनदी अस्ति। इयं कोडगुमण्डले पश्चिमघट्टप्रदेशे तलकावेरी इति स्थाने उद्भवति। एषा नदी कोडगुमण्डलतः तमिलुनाडुराज्यं प्रति प्रवहति। ततः वङ्गासागरं प्रविशति। कावेर्याः उपनद्यः सन्ति शिंशा, हेमावती, अर्कावती, कपिला, कबिनी, लक्ष्मणतीर्थं, लोकपावनी च। कावेरीं "दक्षिणगङ्गा" इति नाम्ना अपि आह्वयन्ति। कावेर्यां स्नानेन सर्वपापानि नश्यन्ति इति भावना अस्ति। कोडगुजनाः कावेरीं स्वकुलदेवता इति भावयन्ति।

कावेरीनद्याः विषये अनेकाः पुराणकथाः सन्ति। तासु अत्र अन्यतमा कथा एवमस्ति।

ब्रह्मणः पुत्री लोपामुद्रा भूलोके लोकोद्धारार्थं वसति स्म। कवेरः इति मुनिः ब्रह्माणम् उद्दिश्य तपः आचरत्। वररूपेण सन्ततिं प्रार्थयत्, तदा लोपामुद्रां पुत्रीत्वेन अलभत च।

एकस्मिन् दिने तत्र अगस्त्यः तपः तप्तुम् आगच्छत्। अगस्त्यः वदति– ''अहं लोपामुद्रां वृणोमि'' इति। लोपामुद्रा अवदत् ''यदि भवान् इतः अन्यत्र गच्छति तर्हि अहं भवतः निरीक्षायां बहुसमयं यापयितुं नेच्छामि। अतः यदि भवान् अन्यत्र गच्छति तर्हि अहं स्वतन्त्रा भूत्वा इतः गच्छामि'' इति। एतम् विषयम् अङ्गीकरोति अगस्त्यः मुनिः। तदा तयोः विवाहः सम्पन्नः।

60. कः ब्रह्माणमुद्दिश्य तपः अकरोत् ?

(A) कवेरः (B) कश्यपः

(C) कण्वः (D) कपिलः

61. कावेर्याः उद्भवस्थानं कुत्र अस्ति ?

(A) आन्ध्रप्रदेशे (B) कर्नाटके

(C) तमिलनाडु (D) केरले

62. कावेरीनदी अत्र कः समासः?

(A) द्विगु (B) द्वन्द्व

(C) उपपद (D) कर्माधारयः

63. के कावेरीं स्वकुलदेवता इति भावयन्ति ?

(A) वनमानवाः (B) केरलजनाः

(C) तमिलुनाडुजनाः (D) कोडगुजनाः

64. कर्णाटकस्य जीवनदी का ?

(A) गङ्गा (B) कृष्णा

(C) कावेरी (D) गोदावरी

XIII. गद्यांशः

परिच्छेदं पठित्वा प्रश्नस्य शुद्धमुत्तरं सूचयत—

देवः श्रीकृष्णः गोकुले आसीत्। नन्दगोपस्य पत्नी यशोदा श्रीकृष्णं मातृवात्सल्येन पोषयति स्म। श्रीकृष्णस्य ज्येष्ठः भ्राता बलरामः वसुदेवस्य पत्न्याः रोहिण्याः पुत्रः। सोऽपि गोकुले श्रीकृष्णेन सममेव अवर्धत। श्रीकृष्णस्य मातुलः कंसः मथुरायां राज्यं पर्यपालयत्। दुष्टः सः बहुविधैः उपायैः श्रीकृष्णं मारयितुं प्रायतत। परन्तु श्रीकृष्णं हन्तुं नाशक्नोत्। अन्ते सः एकमुपायम् अचिन्तयत्। धनुर्यागव्याजेन श्रीकृष्णबलरामौ मथुराम् आनाट्य तौ हन्तुम् उपायम् अकरोत्। महामात्यम् अक्रूरं तावाह्वातुं गोकुलं प्राहिणोत्। अक्रूरः महान् श्रीकृष्णभक्तः। कंसस्य कपटबुद्धिं वञ्चकतां च जानाति स्म। परन्तु अनन्यगतिकः अक्रूरः राजाज्ञां पुरस्कृत्य गोकुलमगच्छत्। अक्रूरः श्रीकृष्णस्य समीपं गत्वावदत्—हे कृष्ण! भवान् मथुराम् आगच्छतु। तव मातुलः कंसः धनुर्यागार्थम् भवन्तौ श्रीकृष्णबलरामावाह्वयतीति। मातुलस्य कपटबुद्धिं जानन्तावपि श्रीकृष्णबलरामौ तस्य आह्वानम् अमन्येताम्। विदितवृत्तान्ताः गोपिकाः तत्र समागच्छन्। ताः श्रीकृष्णम् एवम् अवदन्—प्रभो कृष्ण! त्वं मथुरां मा गच्छ। इहैव तिष्ठ। अन्यथा अस्मान् अपि मथुरां नय इति। श्रीकृष्णोऽवदत् — यूयम् अत्रैव भवत। स्वकार्याणि कुरुत।

65. कः गोकुले आसीत् ?

(A) श्रीनिधिः (B) श्रीरामः

(C) श्रीपतिः (D) श्रीकृष्णः

66. 'प्रभो त्वं मथुरां मा गच्छ' इति काः अवदन् ?

(A) मातारः (B) पत्न्यः

(C) गोपिकाः (D) भगिन्यः

67. श्रीकृष्णस्य मातुलः कः ?

(A) कंसः (B) नन्दः

(C) अक्रूरः (D) बलरामः

68. 'जानन्तावपि' इति पदे सन्धिः कः ?

(A) सवर्णदीर्घः (B) अयादिः

(C) वृद्धिः (D) गुणः

XIV. गद्यांशः

परिच्छेदं पठित्वा प्रश्नस्य शुद्धमुत्तरं सूचयत—

संसारेऽस्मिन् समग्राणि कार्याणि धनेनैव सिध्यन्ति। धनेन विना न कस्यापि वस्तुनः स्थितिर्विद्यते। ब्रह्मचर्याश्रमे विद्याध्ययनाय धनस्यावश्यकता विद्यते। गृहस्थाऽश्रमे स्वकुटुम्बस्य पालन–पोषणार्थं दीनदु :खितानामार्तजनानाञ्चोदर–भरणार्थं धनस्य संग्रहः आवश्यकः। वानप्रस्थाश्रमे तीर्थाटनार्थं स्वभार्यया सह स्वस्थरूपेण च सुखेन निवासार्थं धनमीहते लोकः। किं बहुना, संन्यासाश्रमेऽपि धनस्यावस्यकता ऽस्त्येव। अनेन प्रकारेण इदं स्पष्टं प्रतिभाति यद् यावज्जीवनं धनस्य संचयः सुतरामावश्यकः। धनेन विना न कोऽपि पुरुषः कस्मिन्नपि आश्रमे स्वजीवनयात्रां सुखेन कर्तुं प्रभवति। अस्मिञ्जगति महतो महत्, अल्पादल्पमपि कार्यं धनेन विना न कदाऽपि संभवति। पाठशालायाः निर्माणम्, किं वा मन्दिरस्य उद्घाटनम्, किं वा धर्मशालायाः निर्माणम्, किं वा तीर्थाटनस्य सम्पादनम्, किं वा दरिद्रेभ्यः द्रव्यवितरणम्, किं वा कूपवापितडागानां जीर्णोद्धारः किं वा यागस्य निधानम्, किं वाऽतिथीनां सत्कारः, मृतस्यान्त्येष्टिक्रियाऽपि विना द्रव्येण न संभवति। दानस्याभिलाषः, परदुःखनाशस्येच्छा, बुभुक्षितस्योदरदरीपूरणस्याकांक्षा सर्वा अपि शुभेच्छाः धनाभावाद् अजागलस्तनवद् निष्फलतां प्राप्नुवन्ति।

हाटके जीवनस्य सुखदायकानि बहूनि द्रव्याणि सन्ति, परन्तु किं तानि द्रव्यहीनैः पुरुषैर्लभ्यन्ते? यस्य पार्श्वे धनं नास्ति स तु हाटके केवलं द्रव्याणि द्रष्टुं शक्नोति, न चास्वादितुं क्षमते मृष्टान्नम्। केनापि हास्यरसिकेन कविना सत्यमेवोक्तम्।

69. न कस्मिन्नपि आश्रमे.....सुखेन कर्तुम् प्रभवति—

(A) विदेशयात्राम् (B) तीर्थयात्राम्

(C) जीवनयात्राम् (D) कुटुम्बयात्राम्

70. अनेन विना कार्याणि न सिध्यन्ति—

(A) फलेन (B) त्यागेन

(C) कर्मण (D) वित्तेन

71. परिच्छेदं पठित्वा प्रश्नस्य शुद्धमुत्तरं सूचयत—

'भार्या' अस्य शब्दस्य अयमर्थः न—

(A) कान्ता (B) काया

(C) पत्नी (D) जाया

72. 'वस्तुनः' अत्र विभक्तिरस्ति—

(A) तृतीया (B) प्रथमा

(C) सप्तमी (D) षष्ठी

73. एतावत्पर्यन्तं धनस्य संचयः सुतयमावश्यकः—

(A) यावच्छक्तिः (B) यावदृष्टिः

(C) यावद्यौवनम् (D) यावज्जीवनम्

व्याख्यात्मक हल

1. (C) इस परिच्छेद का शीर्षक 'गायत्रीप्रसाद सिंहः' है, क्योंकि इस गद्यांश में भारतवर्ष के आधुनिक दार्शनिक कहे जाने वाले 'गायत्रीप्रसाद सिंह' के बारे में वर्णन है।

2. (D) दार्शनिकेषु अन्यतमः 'गायतीप्रसादसिंहः' अस्ति।

3. (A) उपर्युक्त गद्यांश के आधार पर गायत्रीप्रसाद के पिता का नाम 'शिवमूर्तिः' है। यथा — 'शिवमूर्तिः हृदयाह्लादकः गायत्री–प्रसाद–सिंहः।'

4. (B) गायत्रीप्रसाद के गुरू जी श्री विश्वनाथ पाण्डेय ने बताया कि तुम्हारे हाथ में एक अपूर्व रेखा है अर्थात् रेखा गायत्रीप्रसाद के हाथ में थी।

5. (C) गायत्रीप्रसादस्य गुरूः श्री विश्वनाथपाण्डेयः वदति यत् हस्ते एका अपूर्वा रेखा अस्ति। यदा सः रेखा 'जीवनसंगिनी' भविष्यति।

6. (C) पवित्रतमा नदी 'गंगा' अस्ति। यह नदी हिमालय पर्वत से निकलकर 2525 किलोमीटर की दूरी तय करती हुई बंगाल की खाड़ी में गिरती है। भारत में इसे 'माँ' सम्बोधन से एवं आस्था पूर्ण रूप से माना जाता है।

7. (B) 'भागीरथ्याः' नाम सुरसरिता इत्यस्ति। अर्थात् 'भागीरथी' का नाम सुरसरिता है। गंगा के अनेक पर्यायवाची शब्द हैं, जैसे— भागीरथी, सुरसरिता, जाह्नवी, त्रिपथगा, देवनदी, सुरापगा, सुरसरि आदि।

8. (D) 'वाराणसी' गंगा (जाह्नव्याः) नदी के तट पर स्थित है।

9. (B) भारत के लोग नदियों का पूजन 'देवता रूप' (देवतारूपेण) में करते हैं। इसीलिए नदियाँ भारतीयों की आस्था का प्रतीक हैं।

10. (A) मुक्तिदायिनी 'भागीरथी' अस्ति। अर्थात् मुक्ति प्रदान करने वाली माँ 'गंगा' (भागीरथी) हैं।

11. (C) मधुरभाषी

12. (B) प्रयागनगरे

13. (D) त्रयोविंशतितमे

14. (B) जनसेवा

15. (B) दिये गए गद्यांश के अनुसार संस्कृत कवियों में कालिदास को 'मुकुटमणि' कहा

गया है। '' महाकविः कालिदासः संस्कृत कवीनां मुकुटमणिरस्ति।''

16. (D) समग्र विश्व के श्रेष्ठ कवियों में कालिदास को प्रमुख माना गया है। ''न केवलं भारतदेशस्य अपितु समग्रविश्वस्योत्कृष्ट–कविषु स एकतमोऽस्ति।''

17. (C) 'देशान्तरेषु' में सप्तमी विभक्ति बहुवचन है। सप्तमी विभक्ति का क्रम यह है – देशान्तरेः, देशान्तरयोः, देशान्तरेषु।

18. (B) 'एकतम्' में 'तमप्' प्रत्यय है। 'तमप्' प्रत्यय का प्रयोग विशेषण के अंत में उसे उत्तमावस्था में बदलने के लिये होता है।

19. (A) 'अस्ति' शब्द में लट् लकार प्रथम पुरुष एकवचन है। यथा– 'अस्' (होना) अर्थ में– अस्ति, स्वः सन्ति।

20. (D) **रात्रौ**

गद्यांश के अनुसार–'इन्दुः' रात्रौ उद्यते। इन्दु अर्थात् चन्द्रमा रात्रि में उदय होता है।

विशेष–चन्द्रमा पृथ्वी का एकमात्र उपग्रह है। यह सौर मंडल का पाँचवाँ सबसे विशाल प्राकृतिक उपग्रह है। यह सूर्य के प्रकाश से प्रकाशित होता है। पृथ्वी से चन्द्रमा की दूरी 3,84,403 किलोमीटर है। यह दूरी पृथ्वी के व्यास का 30 गुना है। यह पृथ्वी की परिक्रमा 27.3 दिन में पूरी करता है और अपने अक्ष के चारों ओर एक पूरा चक्कर भी 27.3 दिन में लगाता है।

21. (D) **सूर्यस्य**

गद्यांश के अनुसार–'सूर्यस्य प्रकाशः स्वकीयः।'

अर्थात्–सूर्य का प्रकाश स्वयं का है।

विशेष–सूर्य अथवा सूरज सौरमंडल के केंद्र में स्थित एक तारा जिसके चारों तरफ पृथ्वी और सौरमंडल के अन्य अवयव घूमते हैं। सूर्य हमारे सौरमंडल का सबसे बड़ा पिंड है और उसका व्यास लगभग 13 लाख 90 हजार किलोमीटर है, जो पृथ्वी से लगभग 109 गुना अधिक है। ऊर्जा का यह शक्तिशाली भंडार मुख्य रूप से हाइड्रोजन और हीलियम गैसों का एक विशाल गोला है। परमाणु विलय की प्रक्रिया द्वारा सूर्य अपने में ऊर्जा पैदा करता है।

22. (C) **परमेश्वरस्य**

गद्यांश के अनुसार–'चन्द्रः सूर्यः च परमेश्वरस्य द्वे नेत्रे।'

अर्थात्–चन्द्रमा और सूर्य परमेश्वर के दो नेत्र हैं।

23. (D) **चन्द्रस्य**

चन्द्रस्य प्रकाशः परकीयः। अर्थात् चन्द्रमा दूसरे अर्थात् (सूर्य) के प्रकाश से प्रकाशित होता है।

24. (C) **शीतला**

चन्द्रिका शीतला वर्तते। चन्द्रमा के प्रकाश को चाँदनी (चन्द्रिका) कहते हैं। चन्द्रमा शीतल होता है। इसी कारण उसके द्वारा किया गया प्रकाश (चाँदनी) भी शीतल होता है।

25. (B) **शिवचापं**

गद्यांश के अनुसार–श्री रामः शिवचापं भित्वा सीतायाः पाणिग्रहणम् अकरोत।' अर्थात् श्री राम ने शिव के धनुष को तोड़कर सीता से विवाह किया।

विशेष–शिव धनुष के संदर्भ में कई प्रसंग हैं–मूल वाल्मीकि रामायण के अनुसार भगवान देवेन्द्र ने समान क्षमता वाले दो धनुष बनाये थे, जो उन्होंने 'शारंग' धनुष को विष्णु भगवान को तथा 'पिनाक' नामक धनुष को भगवान शिव को दिया था। राजा जनक ने शिवधनुष (पिनाक) को प्रत्यंचा चढ़ाने वाले पुरुष के साथ सीता के विवाह की घोषणा की थी और तभी भगवान श्री राम ने धनुष को खण्डित करके सीता के साथ विवाह किया।

26. (B) **तिस्र।**

गद्यांश के अनुसार–दशरथस्य तिस्रः भार्याः आसन्।

ताश्च कौसल्या, सुमित्रा, कैकेयी च।

अर्थात् 'दशरथ की तीन पत्नियाँ थीं– कौसल्या, सुमित्रा तथा कैकेयी।

विशेष–दशरथ वाल्मीकि रामायण के अनुसार अयोध्या के रघुवंशी राजा थे। वह इक्ष्वाकु कुल के थे तथा प्रभु श्रीराम, जो कि विष्णु का अवतार थे, के पिता थे। राजा दशरथ की तीन पत्नियाँ व उनके पुत्र–

कौसल्या के पुत्र – राम

कैकेयी के पुत्र – भरत

सुमित्रा के पुत्र –लक्ष्मण व शत्रुघ्न

27. (B) **लक्ष्मणशत्रुघ्नौ।**

सुमित्रा राजा दशरथ की तीन पत्नियों में से एक थीं। लक्ष्मण और शत्रुघ्न माँ सुमित्रा के ही पुत्र थे।

विशेष–राजा दशरथ के द्वारा किये गये पुत्रेष्टि यज्ञ समाप्त होने पर अग्नि के द्वारा प्राप्त चरु का आधा भाग तो महाराज ने कौशल्या जी को दिया, शेष आधा कैकेयी को प्राप्त हुआ। चतुर्थांश जो शेष था, उसके दो भाग करके महाराज ने एक भाग कौशल्या जी को दिया तथा दूसरा कैकेयी के हाथों पर रख दिया। दोनों रानियों ने उसे सुमित्रा जी को प्रदान दिया। समय पर माता सुमित्रा ने दो पुत्रों को जन्म दिया–(1) लक्ष्मण (2) शत्रुघ्न

28. (D) **वाल्मीकिः।**

सृष्टिकर्ता भगवान वाल्मीकि संस्कृत भाषा के आदि कवि और हिन्दुओं के आदि काव्य 'रामायण' के रचयिता के रूप में प्रसिद्ध हैं। महर्षि कश्यप और अदिति के नवम् पुत्र वरुण (आदित्य) से इनका जन्म हुआ। इनकी माता चर्षणी और भाई भृगु थे।

29. (A) **सूर्यः।**

रघुवंश मूलरूप से भगवान सूर्य के पुत्र वैवस्वत मनु से प्रारम्भ हुआ था, जो सूर्यवंश, इक्ष्वाकु वंश, ककुत्स्थ वंश व रघुवंश नाम ले जाना जाता है। आदिकाल में ब्रह्मा जी ने भगवान सूर्य के पुत्र वैवस्वत मनु को पृथ्वी का प्रथम राजा बनाया था। भगवान सूर्य के पुत्र होने के कारण मनु जी सूर्यवंशी कहलाये तथा इनसे चला यह वंश सूर्यवंश कहलाया। राजा रघु से यह वंश रघुवंश कहलाया। इस वंश में इक्ष्वाकु, ककुत्स्थ, हरिश्चन्द्र, मांधाता, समर, भगीरथ, अंबरीष, दिलीप, रघु, दशरथ, राम जैसे प्रतापी राजा हुये हैं।

30. (D) **फिरोज गांधी।**

राजीव गाँधी के पिता 'फिरोज गाँधी' थे एवं माता इन्दिरा गाँधी थीं।

फिरोज गाँधी का जन्म मुम्बई में एक पारसी परिवार में हुआ था। उनके पिता का नाम जहाँगीर एवं माता का नाम रतिमाई था। फिरोज गाँधी भारत के एक राजनेता तथा पत्रकार थे। वे लोकसभा के सदस्य भी रहे। सन् 1942 में उनका विवाह इन्दिरा गाँधी से हुआ।

31. (A) **प्राथमिकशिक्षणम्।**

गद्यांश के अनुसार–''राजीवस्य प्रारम्भिकी शिक्षा दिल्ली नगरे, देहरादूननगरे च अभवत्।

अर्थात्–राजीव गाँधी (इंदिरा गाँधी के पुत्र) की प्रारम्भिक शिक्षा दिल्ली नगर में और देहरादून नगर में हुई थी।

32. (A) **मातृः मरणानन्तरम्।**

गद्यांशानुसारेण–''31 अक्टोबर, 1984 तमे वर्षे राजीवस्य माता भारतस्य प्रधानमन्त्री उग्रवादिभिः गोलिकाभिः हता। तदा श्री राजीवः प्रधानमन्त्री अभवत्।

अर्थात्–31 अक्टूबर, 1984 को राजीव गाँधी की माता (इन्दिरा गाँधी) जो भारत की प्रधानमंत्री थीं, उग्रवादियों की गोली से मारी गईं। तब श्री राजीव गाँधी प्रधानमंत्री हुये।

33. (C) **क्तः।**

क्त प्रत्यय भूतकाल के अर्थ में प्रयुक्त होता है।

क्त में 'त' शेष बचता है। क्त (त) का प्रयोग कर्मवाच्या और भाववाच्य में किया जाता है।

यथा– जन् (धातु) + क्त (प्रत्यय)

जातः

34. (D) **जवाहरलालः।**

राजीवस्य पितामहः जवाहरलालः अस्ति।

अर्थात्–राजीव गाँधी, इंदिरा गाँधी के पुत्र थे और इन्दिरा गाँधी के पिता जवाहर लाल नेहरू थे। इस प्रकार राजीव गाँधी के बाबा जवाहर लाल नेहरू कहलाते हैं।

35. (A) **ब्यांकस्थलेषु।**

उपर्युक्त गद्यांश में भारतीय मुद्रा 'रुपये' की आत्मकथा का वर्णन किया गया है। गद्यांश के अनुसार–

मम मनसि उदासीनता जायते यतः स्वच्छवायुः ब्यांकस्थलेषु न आगच्छति।

अर्थात्–मेरा मन उदास हो जाता है, जब स्वच्छ वायु बैंक स्थलों में नहीं आती है।

36. (C) **अनन्तरम्।**

निम्न गद्यांश में 'पश्चात्' अर्थ में 'अनन्तरम' शब्द का प्रयोग हुआ है। दोनों ही शब्द 'अव्यय' हैं, जिनका अर्थ समान है।

पश्चात् – पीछे।

अनन्तर – बाद में।

37. (A) **तल्।**

तल् प्रत्यय–इसका प्रयोग सामान्यतः विशेषण से भाववाचक' संज्ञा बनाने के लिए किया जाता है। इसका प्रयोग होने के बाद अंत में 'ता' शेष बचता है।

शब्द – उदासीन
प्रत्यय – तल् } उदासीनता

38. (C) **रुप्यकस्य।**

गद्यांश के अनुसार–अहं रुप्यकमस्मि। मम द्वे रूपे स्तः।

अर्थात्–मैं रुपये हूँ। मेरे दो रूप हैं।

विशेष–रुपये के दो रूप होते हैं या हम इस प्रकार कह सकते हैं कि रुपये दो प्रकार के होते हैं–

(1) मुद्रा रूप

(2) नोट (कागज रूप)

मुद्रा को 'सिक्का' कहते हैं।

39. (B) **टंकसालः।**

गद्यांश में मुद्रणालय के अर्थ में 'टंकसालः शब्द का प्रयोग हुआ है।

मुद्रणालय, प्रिंटिंग प्रेस, छापाखाना या छपाई की प्रेस एक यांत्रिक युक्ति है, जो दाब डालकर कागज, कपड़े आदि पर प्रिन्ट करने के काम आती है।

मुद्रणालय को 'टंकसालः' भी कहते हैं।

40. (D) **उग्ररूपेण।**

गद्यांश के अनुसार–अतः सः दण्डार्हान् उग्ररूपेण दण्डितवान्।

अर्थात् 'अतः' वह (दादाजी कोण्डदेव) दण्डियों के लिए उग्र रूप से दण्डित करते थे।

विशेष–निम्न गद्यांश में दादा जी कोण्ड-देव के जीवन के विषय में वर्णन किया गया है। कोंडदेव अथवा 'खोंडदेव' (जन्म 1577-मृत्यु–1649) मराठा ब्राह्मण और प्रसिद्ध महान मराठा नेता छत्रपति शिवाजी के गुरु और अभिभावक थे।

41. (C) **शिवराजार्थम्।**

शिवराजस्य वासार्थं 'शोण भवनम्' निर्मापितवान्।

अर्थात्–दादा कोंडदेव ने शिवराज को बसाने के लिए 'शोण भवन' का निर्माण करवाया।

42. (B) **दुर्जनाः।**

गद्यांश के अनुसार–तस्मिन् काले पुणे नगरं परितः स्थितं मावलप्रदेशं स्थानीयाः देशमुखाः एव पालयन्ति स्म।

अर्थात्–उस काल में पुणे नगर के चारों ओर स्थित मावलप्रदेश के स्थानीय देशमुख लोग दुर्जन थे।

विशेष–छत्रपति शिवाजी के पूर्व–कालीन परंपरागत राज व्यवस्था का एक ऊपरी दर्जे का अधिकार तथा जवाबदेही का पद 'देशमुखों' का हुआ करता था। देशमुख अपने प्रभाव क्षेत्र का शासक था। शासक के रूप में वह राजस्व कर वसूली का हकदार था और अपने क्षेत्र में पुलिस और न्यायिक कर्तव्यों के रूप में बुनियादी सेवाओं को बनाए रखने की जवाबदेही निभाता था।

43. (C) **मन्दिरम्।**

गद्यांश के अनुसार–पुणे नगरं प्रति आगमनानन्तरं दादाजिः गणपतेः प्रतिष्ठापनां कारयित्वा मन्दिरं निर्मापितवान्।

अर्थात्–पुणे नगर की ओर आने के उपरान्त दादा जी कोंडदेव ने छत्रपति की प्रतिष्ठा कराके मन्दिर का निर्माण करवाया।

44. (D) **अनुशासनेन।**

दादाजी कोंडदेव कर्तव्यनिष्ठ और अनुशासन के लिए ख्याति प्राप्त थे।

45. (D) **पेट्रोल्।**

गद्यांशानुसार–अद्य बाष्पेण रेलयन्त्रं चाल्यते, पेट्रोलेन मोटर–यानम् वायुयानं च। अर्थात्–वायुयान चलाने के लिए 'पेट्रोल' आवश्यक है।

46. (D) **विज्ञानस्य।**

गद्यांश के अनुसार–'एवं संसारस्य देशाः परस्परं निकटीकृताः विज्ञानेन।

अर्थात्–संसार के सभी देश परस्पर विज्ञान की सहायता से ही एक–दूसरे के निकट हो गये हैं।

47. (C) **आकाशवाणी।**

गद्यांश के अनुसार–'आकाशवाण्या शब्दस्य दूरसञ्चारणं क्रियते। एतेन साधनेन अद्य वयं विश्वस्य समाचारान् गीतानि, वाद्यानि, भाषणानि च श्रोतुं, समर्थाः।

अर्थात्–आकाशवाणी दूरसंचार के माध्यम से आज हम सब विश्व के समाचार, गीत, वाद्य यंत्रों की ध्वनि और भाषण आदि को सरलता से सुन सकते हैं।

48. (B) **तमप्।**

तमप् प्रत्यय–इसका प्रयोग विशेषण के अंत में उसे उत्तमावस्था में बदलने के लिए होता है।

इसके जुड़ने पर अंत में 'तमः' शेष बचता है, जिनसे विशेषता बताई जाती है, उसमें षष्ठी या सप्तमी विभक्ति होती है। पु. में रामवत्, स्त्री में रमावत्, नपु. में फलवत् चलते हैं।

यथा–सूक्ष्म–पु. (सूक्ष्मतमः) स्त्रीलि. (सूक्ष्मतमा) नपुंस. (सूक्ष्मतम्)।

49. (D) **विज्ञानम्।**

गद्यांशानुसारेण–'भौतिकानां पदार्थानां विशेषतः ज्ञानं विज्ञानम्।

अर्थात् भौतिक पदार्थों के विशेष ज्ञान को विज्ञान कहते हैं।

50. (B) **शृङ्गद्वयं।**

गद्यांशानुसारेण–शिवलिङ्गस्य उपरि शृङ्गद्वयं विराजते।

अर्थात्–शिवलिङ्ग के ऊपर शृङ्गद्व विराजते हैं।

विशेष–ऋषिशृङ्ग पुर नामक एक गाँव है। यह शृङ्गेरि से 12 किलोमीटर दूर है। यह इतिहास प्रसिद्ध है। यहाँ विभाण्डक के पुत्र ऋषि शृङ्गी का मन्दिर है। ऋषि शृङ्गी को 'वर्षा का देवता' भी कहा जाता है। चैत्र माह में यहाँ देवता का रथ उत्सव होता है।

51. (B) **ऋष्यशृङ्गः।**

गद्यांश के अनुसार– ऋष्यशृङ्गः 'वृष्टिदेवः' इत्येव प्रसिद्धः।

अर्थात्–ऋषि शृंग को वृष्टिदेव' (वर्षा का देवता) भी कहा जाता है।

विशेष–एक बार एक ब्राह्मण अपने क्षेत्र में फसल की पैदावार के लिए मदद माँगने के लिए राजा रोमपाद के पास गया, तो राजा ने उसकी बात पर ध्यान नहीं दिया। अपने भक्त की बेइज्जती पर गुस्साए इन्द्र ने बारिश नहीं होने दी, जिस वजह से सूखा

पड़ गया। तब राजा ने ऋष्यशृंग को यज्ञ करने के लिए बुलाया। यज्ञ के बाद भारी वर्षा हुई, तब से ही ऋष्यशृंग को 'वर्षा का देवता' कहा जाता है।

52. (C) **विभाण्डकस्य।**

गद्यांश के अनुसार– "अत्र विभाण्डकपुत्रस्य ऋष्यशृङ्गस्य देवालयः अस्ति।"

अर्थात्–यहाँ (शृङ्गेरी) में विभाण्डक के पुत्र ऋष्यशृंग का मन्दिर है।

विशेष–महर्षि शृंग का जन्म त्रेता युग में अषाढ़ मास की पूर्णिमा को पूर्वाषाढ़ नक्षत्र में शापित देव कन्या मृगी के गर्भ से हुआ। उनके पिता महर्षि विभाण्डक–ब्रह्मा जी के मानस पुत्र मरीचि के पौत्र व कश्यप मुनि के पुत्र थे, जो परम तपस्वी, वेदों के महान विद्वान एवं ब्रह्मनिष्ठ ऋषि थे।

53. (C) **चैत्रे मासे।**

गद्यांश के अनुसार–चैत्रे मासे देवस्य स्थोत्सवः भवित'।

अर्थात्–चैत्र के महीने में देव का रथ उत्सव होता है।

54. (A) **चिक्कमगलूरुमण्डले।**

गद्यांश के अनुसार–'ऋष्यशृङ्गपुरम् चिक्कमगलूरुमण्डले अस्ति।

अर्थात्–ऋष्यशृङ्गपुर चिक्कमगलूरु मण्डल में है।

विशेष–चिकमगलूर (इसे चिक्कमगलुरु के नाम से भी जाना जाता है) यह शहर भारत के कर्नाटक राज्य के चिक्कमगलुरु जिले में स्थित है।

55. (B) **जवाहरलाल नेहरू स्टेडियम्।**

उपर्युक्त गद्यांश के अनुसार–क्रीडानाम् उद्घाटनं–जवाहरलाल नेहरू स्टेडियम्क्षेत्रे प्रातः नववादनकाले राष्ट्रपतिना श्री ग्यानि जाइल् सिंग् महोदयेन संगीतस्य मधुरध्वनिना कृतम्।

'खेलों का उद्घाटन जवाहरलाल नेहरू स्टेडियम में सुबह नौ (9) बजे राष्ट्रपति श्री ग्यानि जैल सिंह महोदय के द्वारा संगीत की मधुर ध्वनि में किया गया।

जवाहर लाल नेहरू स्टेडियम भारत की राजधानी नई दिल्ली में स्थित एक बहुउद्देशीय स्टेडियम है, जहाँ बड़े स्तर पर खेल स्पर्धायें और संगीत कार्यक्रम आयोजित किए जाते हैं। यह सन् 1982 में खोला गया एवं इसमें 60,000 दर्शकों के बैठने की क्षमता है। यह भारत का तीसरा और विश्व का 51वाँ सबसे बड़ा स्टेडियम है।

56. (C) **तृतीया।**

''सहयुक्तेऽप्रधानम्'' अर्थात् सह, साकम्, सार्धम्, सयम् के साथ वाले शब्दों में तृतीया विभक्ति होती है।

जैसे–शिष्यः गुरुणा सह विद्यालयं गच्छति।

57. (C) त्रयस्त्रिंशत्।

गद्यांश के अनुसार–'आसु प्रतियोगितासु त्रयस्त्रिंशत् देशाः प्रतिभागिनः आसन्।

सम्पूर्ण भावार्थ–नौवें एशियाई खेल 19 नवम्बर से 4 दिसम्बर, 1982 तक दिल्ली में आयोजित किए गए थे। एशिया के 33 देशों से कुल 4595 खिलाड़ियों 'ने' इन खेलों में भाग लिया।

58. (D) भालेन्द्र सिंह

59. (D) **क्तः।**

क्त प्रत्यय–क्त प्रत्यय का प्रयोग लङ्ग लकार–'भूतकाल' में किया जाता है। क्त प्रत्यय के प्रयोग होने पर अन्त में पुल्लिग में 'तः' स्त्रीलिंग में 'ता', नपुंसकलिङ्ग में 'तम्' शेष बचता है। यथा–

कृ–कृतः (पु.) कृता (स्त्री.)
कृतम् (नपुं.)

60. (A) **कवेरः।**

गद्यांश के अनुसार–'कवेरः इति मुनिः ब्रह्माणम् उद्दिश्य तपः आचरत्।

कावेरी नदी के विषय में अनेक पौराणिक कथायें हैं, उनमें से एक यह भी है–कि ब्रह्मण की पुत्री लोपमुद्रा भू–लोक में लोक के उद्धार के लिए रहती थी। कवेर ने मुनि ब्रह्मण की पुत्री के उद्देश्य से तप किया।

61. (B) **कर्नाटके।**

कावेरी कर्नाटक की पूर्व कुर्ग रियासत से निकलती है। यह पूर्व मैसूर राज्य को सींचती हुई दक्षिण पूर्व की ओर बहती है और तमिलनाडु के एक विशाल प्रदेश को हरा–भरा बनाकर बंगाल की खाड़ी में गिरती है। कुर्ग की पहाड़ियों से लेकर समुद्र तक कावेरी की लम्बाई 772 किमी है। (50) पचास के करीब छोटी–बड़ी नदियाँ कावेरी में आकर गिरती हैं।

62. (D) **कर्माधारयः।**

कर्मधारय समास–(तत्पुरुषः समानाधिकरणः तत्पुरुषः)–जहाँ पूर्वपद और उत्तरपद दोनों पदों में समान विभक्ति–वचन लिङ्ग द्वारा परस्पर समास होता है, 'कर्मधारय समास' कहलाता है। **यथा**–कावेरीनदी–कावेरी इति नदी–(सम्भावना पूर्वपद)।

63. (D) **कोडगुजनाः।**

गद्यांश के अनुसार–'कोडगुजनाः कावेरीं' स्वकुलदेवता इति भावयन्ति।' अर्थात्–कोडगु के लोग कावेरी नदी को अपना कुल देवता मानते हैं। कोडगु भारत के कर्नाटक प्रान्त का एक जिला है। इसके पश्चिम से कावेरी नदी का उद्गम स्थल प्राप्त होता है।

64. (C) **कावेरी।**

कावेरी कर्नाटकस्य जीवनदी अस्ति' अर्थात् कावेरी कर्नाटक की जीवनदायिनी नदी है।

65. (D) **श्रीकृष्णः।**

गद्यांश के अनुसार–देवः श्रीकृष्णः गोकुले आसीत्।

'देव श्रीकृष्ण गोकुल में थे।'

विशेष–श्रीकृष्ण भगवान विष्णु के 8 वें अवतार और हिन्दू धर्म के ईश्वर माने जाते हैं। इनका जन्म 'द्वापरयुग' में हुआ था। कृष्ण 'वसुदेव' और 'देवकी' की 8 वीं संतान थे। मथुरा के कारावास में उनका जन्म हुआ था और गोकुल में उनका पालन हुआ था। यशोदा और नन्द उनके माता पिता थे।

66. (C) **गोपिकाः।**

गद्यांश के अनुसार–'ताः' श्रीकृष्णम् एवम् अवदन् प्रभो कृष्ण! त्वं मथुरां मा गच्छ।

अर्थात्–वे सब (गोपियाँ) श्रीकृष्ण से कहती हैं–प्रभु कृष्ण! तुम मथुरा मत जाओ।

विशेष–मथुरा से कंस का धनुयोग–संदेश लेकर आये श्री अक्रूर जो श्री कृष्ण को अपने साथ चलने को कहते हैं एवं कृष्ण भी सहर्ष स्वीकार कर लेते हैं। विरहावस्था के दुःख से भयभीत समस्त गोपियाँ श्री कृष्ण को मथुरा जाने से रोकती हैं।

67. (A) **कंसः।**

श्रीकृष्णस्य मातुलः कंसः। श्रीकृष्ण का मामा 'कंस' था। कंस यदुकुल के राजा थे, जिसकी राजधानी मथुरा थी। वह भगवान कृष्ण की माँ देवकी का भाई था। कंस का जन्म राजा अग्रसेन और रानी पद्मावती के यहाँ हुआ था।

68. (B) **अयादिः।**

अयादि सन्धि–(एचोऽयवायावः)– पूर्वपद में एच् (ए ओ ऐ, औ) हों, तो उनको क्रमशः 'अय्, अव्, आय, आव् आदेश होते हैं, स्वर परे रहने पर। यथा–

जानन्तौ + अपि
↓
औ (एच्)
↓ ↓
आव् (आदेश)
जानन्तावपि

69. (C) **जीवनयात्राम्।**

गद्यांश के अनुसार—'धनेन विना न कोऽपि पुरुषः कस्मिन्नपि आश्रमे स्वजीवनयात्रां सुखेन कर्तुं 'प्रभवति।'

अर्थात्—धन के बिना कोई भी मनुष्य किसी भी आश्रम में अपनी जीवन यात्रा सुखपूर्वक सम्पूर्ण नहीं कर सकता।

विशेष—आश्रम चार प्रकार के होते हैं। मनुष्य का सम्पूर्ण जीवन इन्हीं चार आश्रमों में विभाजित होता है।

(1) ब्रह्मचर्याश्रम, (2) गृहस्थाश्रम, (3) वानप्रस्थाश्रम, (5) संन्यासाश्रम।

70. (D) **वित्तेन।**

गद्यांश के अनुसार—'संसारेऽस्मिन् समग्राणि कार्याणि धनेनैव सिध्यन्ति।'

अर्थात्—संसार में कोई भी कार्य धन के अभाव में सिद्ध नहीं होता है।

71. (B) **काया।**

'भार्या' शब्द का अर्थ 'पत्नी' होता है। इसके कई पर्याय शब्द हैं—अर्धांगिनी, वनिता, दारा, कलत्र, संगिनी, सहचरी, कान्ता, जाया आदि।

परन्तु निम्नलिखित दिये गए विकल्पों में 'काया' विकल्प 'भार्या' अर्थ को प्रकट नहीं करता है।

काया का अर्थ है—शरीर, देह।

72. (D) **षष्ठी।**

'वस्तुनः' शब्द का मूल शब्द 'वस्तु' है, जो नित्य नपुंसकलिङ्ग शब्द है।

'वस्तु' की षष्ठी विभक्ति एकवचन में 'वस्तुनः' रूप बनता है।

यथा—वस्तुनः वस्तुनोः वस्तूनाम्।

73. (D) **यावज्जीवनम्।**

गद्यांश के अनुसार—'अनेन प्रकारेण इदं स्पष्टं प्रतिभाति भद् यावज्जीवनं धनस्य संचयः सुतरामावश्यकः।'

अर्थात्—अनेक प्रकार से यह स्पष्ट हो जाता है कि जीवन के लिए धन का संचय करना अतिआवश्यक है।

❑❑